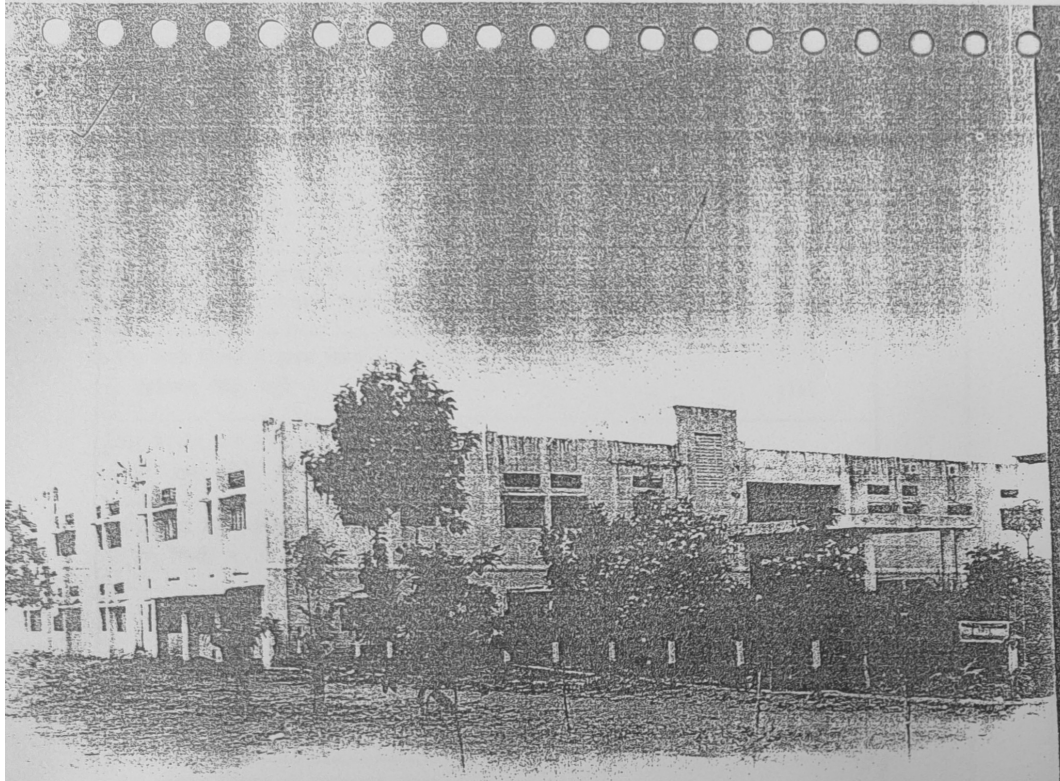

Cosmos

IMPACT FACTOR
5.234

Indexed

IMPACT FACTOR 6.021 iijif

Publisher & Owner

Archana Rajendra Ghodke

Harshwardhan Publication Pvt.Ltd

At.Post.Limbaganesh, Tq.Dist.Beed 431126

(Maharashtra) Mob.09850203295

E-mail: vidyawarta@gmail.com

ISSN 2319 9318

VIDYAWARTA

Peer Reviewed International Refereed Research Journal

स्वयं वित्त पोषित,

एक दिवसिय राष्ट्रीय संगोष्ठी तिथि ४ जनवरी २०२०

हिंदी साहित्य में कृषक चेतना

संयोजक

हिंदी विभाग

श्री गजानन शिक्षण प्रसारक मंडल, येलदरी कैम्प द्वारा संचलित, (भाषिक मारवाडी अल्पसंख्यांक संस्था)

तोष्णीवाल कला, वाणिज्य एवं विज्ञान महाविद्यालय,

सेनगाव, ता.सेनगांव, जि.हिंगोली

■ संलग्न ■

स्वामी रामानंद तीर्थ मराठवाडा विश्वविद्यालय, नांदेड

प्रा.एस.जी.तळणीकर
प्र.प्रधानाचार्य

प्रा.प्रमोद घन	डॉ.शंकर पजई	डॉ.विजय वाघ
संगोष्ठी सचिव	संगोष्ठी संयोजक	संगोष्ठी सह संयोजक

Scanned with ACE Scanner

Index

01) हिंदी साहित्य में कृषक चेतना (उप विषय: हिंदी धारावाहिकों में कृषक चेतना)
सूर्यकांत त्रिपाठी निराला, मदुरै ||14

02) हिन्दी फिल्मों में कृषक चेतना
शक्तिवीर सिंह, मदुरै ||17

03) प्रेमचंद कथा साहित्यमें कृषक विमर्श: एक प्रासंगिक अध्ययन
डॉ. राम भरोसे, टिहरी–गढ़वाल, उत्तराखण्ड ||21

04) कृषकों की कराह में तब्दील होती खेती
डॉ. निम्मी ए. ए., त्रिवेंद्रम, केरल ||29

05) प्रेमचन्द का 'गोदान' उपन्यास किसानों के जीवन की त्रासदी की महागाथा गोदान: ...
डॉ. अंजू सिंह, जबलपुर(एम.पी.) ||34

06) विवेकी राय के उपन्यासों में कृषक जीवन
डॉ. के. बी. गंगणे, जि. बीड ||38

07) भारतीय किसान की त्रासद गाथा गोदान
प्रा.डॉ. शेषराव लिंबाजी राठोड, परभणी (महाराष्ट्र) ||41

08) कल्पलता उपन्यास में कृषक चेतना
डॉ. रामकृष्ण बदने, जि. नांदेड ||43

09) किसान का संघर्ष और हिंदी कथा–साहित्य
डॉ. सतीश यादव, रेणापुर ||47

10) समकालीन साहित्य में कृषक चेतना
प्रा.डॉ. [illegible] चौधरी, नांदेड ||53

11) गोदान कृषक चेतना का आईना
प्र. डॉ. रविंद्रनाथ माधव पाटील, चंद्रपुर ||55

12) हिन्दी उपन्यासों में कृषक जीवन का चित्रण
डॉ. संतोष टी. [illegible], जि. गोंदिया (महाराष्ट्र) ||59

13) गोदान : कृषक जीवन यथार्थ चेतना
लेफ्ट. डॉ. अनिता शिंदे, अहमदपुर ||65

14) हिंदी उपन्यासों में कृषक चेतना
प्रा. डॉ. रणजीत जाधव, ता. जि. लातूर ||67

15) अभंग–गाथा नाटक में चित्रित कृषक त्रासदी और विद्रोह
डॉ. रमेश संभाजी कुरे, जि. हिंगोली, महाराष्ट्र ||70

16) संजीव के उपन्यास 'फाँस' में कृषक चेतना
डॉ. कांचन बाहेती ([illegible]), नांदेड ||74

17) साठोत्तरी नाटकों में कृषक जीवन
डॉ. सुधीर गणेशराव वाघ, हिंगोली, महाराष्ट्र ||78

18) हिंदी उपन्यासों में कृषक चेतना
डॉ. अर्शिया सैय्यद अफसरअली, नागपुर ||81

19) नागार्जुन की कविताओं में कृषक चेतना
डॉ. सुभाष क्षीरसागर, अहमदनगर ||84

20) गोदान उपन्यास में कृषक चेतना
डॉ. [illegible] संभाजी [illegible], जि. लातूर, महाराष्ट्र ||87

21) किसानों के शोषण एवं अभाव ग्रस्तता का यथार्थ चित्रण पूस की रात
प्रा.डॉ. एस. डी. ईंगोले, जि. परभणी, (महाराष्ट्र) ||90

22) मिथिलेश्वर के उपन्यास साहित्य में ग्राम [illegible]
प्रा.डॉ. दिग्विजय टेंगसे, औरंगाबाद ||93

23) [illegible] कृत [illegible] कहानी में कृषक चेतना
डॉ. पुष्पलता अग्रवाल, लातूर ||96

24) गोदान के माध्यम भारतीय किसान की त्रासदी
डॉ. शिवाजी [illegible] भटारे, जिला नांदेड ||99

25) [illegible] उपन्यास में कृषक चेतना
डॉ. [illegible], लातूर ||102

Scanned with ACE Scanner

ने किया है। गाँव के सारे गरीब किसानों के परनोट जलाकर राख कर देना इस बात की ओर संकेत है कि सहनशीलता की सारी सीमाएँ खत्म हो चुकी है। अब हथियार वही अपनाना होगा जिससे समस्या को समूल नष्ट किया जाए। इस कहानी द्वारा निर्मोही जी गरीब किसानों के खुशहाल जीवन की कल्पना करते है।

संदर्भ सूची :

१. हिंदी उपन्यास: एक अन्तर्यात्रा: डॉ. रामदरश मिश्र, पृ. ३३
२. ग्राम्य–जीवन की कहानियाँ:सं. गिरिराजशरण अग्रवाल, मुख्यपृष्ठ से।
३. ग्राम्य–जीवन की कहानियाँ: सं. गिरिराजशरण अग्रवाल, भूमिका (ग्रामीण जीवन का दस्तावेज से)
४. स्वातंत्र्योत्तरहिंदी उपन्यास और ग्राम चेतना: डॉ. ज्ञानचन्द गुप्त, पृ. १९
५. ग्राम्य–जीवन की कहानियाँ: सं. गिरिराजशरण अग्रवाल, पृ. ९३
६. वहीं, पृ. ९०
७. वही, पृ. ९३
८. वही, पृ. ९४

□□□

24

गोदान मे व्यक्त भारतीय किसान की त्रासदी

डॉ. शिवाजी नागोबा भदरगे
सहायक प्राध्यापक एवं हिंदी विभाग प्रमुख,
ह. ज. पा. महाविद्यालय जिला नांदेड

हिंदी उपन्यास साहित्य में प्रेमचंद द्वारा लिखी गोदान यह रचना भारतीय किसान जीवन को अधोलिखित करने वाली पहली रचना ही होगी। जिस रचना में भारतीय परंपरागत सामंतशाही विचारधारा के तहत जीने वाले किसान के जीवन त्रासदी को प्रेमचंद ने बखूबी चित्रित करने का प्रयास किया है। प्रेमचंद ने गोदान में होरी के माध्यम से भारतीय किसान की प्रातिनिधिक त्रासदी को चित्रित करते हुए भले ही ९० वर्ष पहले गोदान लिखा हो। परंतु वर्तमान में भी भारतीय किसान होरी मानसिकता के चपेट अपना जीवन जी रहा है। देश की ८० फीसदी आबादी किसी न किसी रूप में कृषि से जुड़ी हुई है। प्राचीन काल में जमींदारी प्रथा ने भारतीय किसान की कमर तोड़ दी थी। किसान भूमिगत होने के बावजूद भी सावकार, महाजन का कर्ज चुकारा करते–करते भूमिहीन, घरहीन, दरिद्री होता हुआ दिखाई दे रहा है। और उनके जमीन पर बड़े–बड़े जमींदार भूस्वामी होकर मजे मार रहें हैं। इस लिए आज गांव के गांव उजड़ गए। छोटे किसान अपनी जमीन को बेचकर अपने रोजी रोटी के लिए महाजनो में मजदूरी, काम, धंदा, व्यवसाय करने के लिए चल बसे। महाजन तथा बैंकों के कर्ज के चंगुल में फंसे हुए आज के किसान आत्महत्या करते नजर आ रहे हैं। सरकारी संस्था, सरकारी नीति यह आज भी किसान के लिए फायदेमंद नहीं है। लगभग निजी शाहुकारों तथा व्यापारियों और बैंकों का कर्ज चुका ना पाने के कारण किसान आत्महत्या कर रहे

Scanned with ACE Scanner

है,। पूरे देश की आंखों में कृषि और किसान के प्रति अविश्वास और घृणा हो रही है। किसान की त्रासदी आजादी के पूर्व से ही दिखाई देती है। प्रेमचंद ने गोदान के माध्यम से उसकी जड़ दुनिया के सामने रखी है। किसान होरी आपने फसल से आए हुए पैसे ब्याज में देते– देते उसकी फसल हाथ से निकालकर शाहुकार ले जाती है। भारतीय किसान की इस त्रासदी को गोदान में प्रेमचंद ने मार्मिक ढंग से अभिव्यक्त किरते हुए किसान की समस्याओं को उठा कर उसका समाधान भी ढूंढने की कोशिश की यह गोदान की विशेषता है।

प्रेमचंद के अनेक उपन्यास है। परंतु किसान जीवन संघर्ष को लेकर लिखे गए उनके प्रेमाश्रम, कर्मभूमि और गोदान तीन उपन्यास पाए जाते हैं। प्रेमचंद के उपन्यास मे किसान के अलग–अलग पहलू अभिव्यक्त हुए हैं। कर्मभूमि में बढ़ते हुए आर्थिक संकट और किसान की लगान बंदी की लड़ाई पर चित्रण हुआ है। प्रेमाश्रम में बेदखली और इजाफा लगान पर चित्रण हुआ है। और गोदान में होरी के माध्यम से किसान की समस्त समस्याओं को समाहित करने का प्रयास प्रेमचंद करते हैं। गोदान उपन्यास में सामंतवादी और पूंजीवादी व्यवस्था की चपेट में दीमक को तरह पिसते हुए किसान को अंदर से खोखला कर दिया है। और अंत में वह डहकर गिर जाती है। इसका प्रतेय मिलता है। इस बात को अभिव्यक्त करते हुए डॉ. रामविलास शर्मा अपनी पुस्तक प्रेमचंद और उनका युग में लिखते हैं कि गोदान में किसानों की शोषण का रूप ही दूसराहै। यह सीधे–सीधे राय साहब के कारिंदे होरी का घर लूटने नहीं पहुंचते लेकिन उसका घर लूट जरूर जाता है। यहां अंग्रेज अंग्रेजी राज के कचहरी कानून सीधे–सीधे उसकी जमीन छीनने नहीं पहुंचते लेकिन जमीन छीन जरूर जाती है। होली के विरोधी बड़े सतर्क हैं। ऐसा काम करने में झिझकते है। जिससे होरी दस–पॉच को इकट्ठा करके उनका मुकाबला करने को तैयार हो जाए। वह उनके चंगुल में फंसकर तिल–तिल कर मरता है। लेकिन समझ नहीं पाता कि यह सब क्यों हो रहा है। वह तकदीर को दोष देकर रह जाता है, समझता हैय यह सब भाग्य का खेल है, मनुष्य का इसमें कोई बस नहीं।

प्रेमचंद द्वारा लिखित गोदान में होरी का चरित्र भारतीय किसान का प्रतिनिधित्व करता है। भारत में व्याप्त होरी जैसे गरीब किसान जी रहे है। जो जमींदारों और महाजनों के शोषण की चक्की में पीसें जा रहे है। इस संदर्भ में रामविलास शर्मा लिखते हैं गोदान की गति धीमी है होरी के जीवन की गति की तरह यहां से लाभ का वेग नहीं है। लहरों के थपेड़े नहीं है। या ऊपर से शांत दिखने वाली नदी भंवरे ही जो भीतर ही भीतर मनुष्य को डुबोकर तलहटी से लगा लेती है। और दूसरों को बहुत तभी दिखाई देते हैं। जब उसके लाशों पर आती हुई बहने लगे। इस तरह होरी के रूप में गोदान में भारतीय किसान की दारुण दशा का वर्णन प्रेमचंद ने किया है। जो अन्यत्र किसी भाषा की रचना में नहीं मिलता। गोदान में सामाजिक शोषण का भी चित्रण हुआ है। इसकी भी आलोचना गोदान उपन्यास करता है। प्रेमचंद राष्ट्रीय स्वाधीनता आंदोलन को समाज के वंचित तबकों किसान, महिला, दलित, मजदूर आदि के हित में देखते हैं। गोदान के होरी का जीवन इतना दयनीय है कि वह चाह कर भी कुछ नहीं कर सकता। उसकी बिकट परिस्थिति होने के कारण अपनी पत्नी धनिया से वह कहता है जब दूसरे के पांव तले अपनी गर्दन दबी हुई है तो उन हवाओं के साथ सहलाने में ही कुशल है। इसी बात से होरी के शोषण की शुरुआत हो जाती है। संपूर्ण उपन्यास में प्रेमचंद ने होरी का शोषण किस तरह सामंती और पूंजीवादी व्यवस्था करती है। इस परप्रकाशडालाहै।

प्रेमचंद के गोदान की चेतना भारतीय किसान के जीवन पद्धति को निर्धारित करती है। प्रेमचंद किसान को ही देश का मुख्य आधार मानते हैं। उनका मानना है कि, हमारे देश की स्थिति किसान की स्थिति पर निर्भर है। इस बात को व्यक्त करते हुए डॉ. रामवृक्ष बेनीपुरी आपने किताब प्रेमचंद और भारतीय किसान में लिखते हैं किसान समाज का आधार होता है समाज का उत्पादक वर्ग किसान है उसी की उन्नति से देश की उन्नति संभव है। उसकी बदहाली देश की बदहाली।

प्रेमचंद किसान के प्रति आशावाद निर्माण करते हैं। उनको संघर्ष की प्रेरणा देते हैं और बिना रुके

हर कठिनाइयों को पार करते हुए जीवन जीने की प्रेरणा भी देते हैं। उनके पात्र शहर में जाकर भी गांव से नाता रखते हैं। गोबर जब शहर से वापस गांव आता है तो घर की दयनीय स्थिति उसे झकझोर कर देती है। उसे घर की परिस्थिति का अंदाज लग जाता है तब वह उससे छुटकारा पाने के लिए संघर्ष भी करता है। प्रेमचंद का मन शहर की अपेक्षा गांव में अधिक रमा हुआ है। इसका कारण किसानों के प्रति उनकी सहानुभूति रहीं हैं। गोदान यह किसान जीवन पर केंद्रित है इसलिए किसानों की समस्या के साथ–साथ उसका निराकरण भी वे बताते है। प्रेमचंद आदर्शोन्मुख–यथार्थवादी लेखक माने जाते हैं। इसलिए सामंतवाद, पुंजिवाद और रूढ़िवाद के सामने विद्रोह करते है। इस दृष्टि से प्रेमचंद कठीन परिस्थिति में भी अनुकूल समझौता कर लेते हैं। प्रेमचंद पर गांधी विचारधारा का गहरा प्रभाव है। प्रेमचंद ने गोदान में एक जगह आर्थिक शोषण का बड़ा ही व्यंग्य पुर्ण चित्रण किया जैसे एक नजराने का हुआ कि नहीं? हां सरकार!, एक तहरीर का?, हां सरकार! एक कागज का?, हां सरकार!, एक दस्तूरी का?, हां सरकार!, एक सूद का?, हां सरकार!, पांच नगद, दस हुए कि नहीं?, इसी तरह महाजन पांच रुपए देता है और दस गिना लेता है। इसी तरह कम पैसे देकर अधिक रुपए गिनाए हासिल कर लेता है। शाहुकार किसान को हमेशा आर्थिक चंगुल में फंसा लेता है। इसे महात्मा फुले ने भी गुलामगिरी ग्रंथ में किसान की इसी स्थिति को चित्रित किया है।

किसान के प्रति प्रेमचंद की उदारता और उनके कष्ट तथा शोषण को देखकर उनका मन पिघल जाता है और उनके भयानक त्रासदी को होरी के माध्यम से चित्रित करते हैं। किसान के प्रति उनकी भावना को अभिव्यक्त करते हुए डॉ. इंद्रनाथ मदान लिखते है प्रेमचंद पहले ऐसे भारतीय लेखक है। जिन्होंने गहराई से किसानों के जीवन का अध्ययन किया हो और जिन्होंने उसे इतनी सजीव कल्पना तथा अद्भुत कौशल के साथ चित्रित किया हो। उनका यह कार्य हिंदी कथा साहित्य में बेजोड़ है। गोदान किसान के जीवन का काल्पनिक प्रतिनिधित्व करता है और अत्याचारी सरकार के साथ उसने जो मोर्चा लिया है उसका जीता–जागता स्वरूप प्रस्तुत करता है। प्रेमचंद ने गोदान उपन्यास में होरी किसान के कथानक को सामने करखते हुए भारतीय किसान के जीवन संघर्ष को अधोरेखित किया है। गोदान में होरी अपने जीवन में अंत तक संघर्षरहकर वह हार नहीं मानता। उसमें जीवन के प्रति आशा और सकारात्मकता है। वह अपनी पत्नी धनिया से कहता है तो क्या तु समझती है, मैं बूढ़ा हो गया? अभी तो चालीस भी नहीं हुए। मर्द साठे पर पाठे होते है। जीवन के प्रति की पूर्ति जोश और जिजीविषा खुद प्रेमचंद में होने के कारण उन्होंने यह बात होरी में भरने का प्रयास किया है। जीवन में संघर्ष और श्रम करने की प्रेरणा होरी के माध्यम से भारतीय किसान को दी है। होरी मृत्यु के अलावा जीवित रहकर संघर्ष करना चाहता है। वह कहता है कि, मृत्यु मनुष्य जीवन का अंत नहीं है ऐसा उसका मानना था। इसलिए डॉ इंद्रनाथ मदान एक जगह लिखते है होरी ऋण के बोझ से बुरी तरह दबा हुआ है। जीविका चलाने के लिए वह तीन सावकार उसे रुपए उधार लेने पर विवश हो जाता है। ऋण दिन पर दिन बढ़ता चला जाता है। ऋण चुकाने और मितव्ययिता से दिन काटने के लिए वह अपनी शक्ति से भी अधिक काम करता है। बहुत दिनों तक अधभूखा रहने के बाद एक दिन वह सड़क पर गिर पड़ता है और उसकी जीवन लीला समाप्त हो जाती है। इसके बावजूद भी उसके जीवन की विडम्बना तब होती है जब रुपए मांगने वाले सेठ साहूकार उसके पास आ जाते हैं और उसकी पत्नी धनिया विलाप करते हुए घर से विस आने ब्राह्मण के पवित्र हाथों पर रखते हुए कहती है कि, महाराज, घर में गाय है न बछिया, न पैसा। यही इनका गोदान है।

अत: होरी के माध्यम से प्रेमचंद ने किसान को जीवन की पीड़ा और उसके कष्ट को सामने रखा। भारतीय किसान पैदा हुए जब से उसके जिंदगी में कष्ट होते है मरते दम तक होरी इसका उदाहरण है। वह अपने स्फूर्तिसे श्रमद्वारा जिंदगी के साथ संघर्ष करता है। किसान को समाज में उत्पाद वर्ग के रूप में पहचान निर्माण कर देश को उन्नति करना आज के मायने में बहुत महत्वपूर्ण है। तब कहीं जाकर समाज और राष्ट्र हित होगा। आए दिन किसान निर्धन होते हुए खुदखुशी करने के लिए तत्पर हुआ है। सदियों से लेकर हमारे यहां सामंतवाद, शोषण को आत्मसात

Scanned with ACE Scanner

करने वाली व्यवस्था बन चुकी है। वर्तमान में भी सामंतवाद दिखाई देता है। इसलिए आज भी किसान आत्महत्या कर रहे हैं। पूंजीवादी व्यवस्था से मनुष्य निराश होकर आत्महत्या की तरफ बड़ता है। आज यही स्थिति कुछ किसानों की दिखाई दे रही है। बच्चों की खर्चीली शिक्षा, लड़कियों की शादी, घाटे की खेती किसान के लिए सौदा बन चुकी है। आजादी के इतने साल गुजरने के पश्चात भी किसानों की चिंता दिन–ब–दिन बढ़ती ही जा रही हैं। दुनिया के सबसे बड़े जनतांत्रिक कहे जाने वाले भारतीय सरकार को किसानों की इस समस्या का दायित्व उठाना होगा। उनकी हर दृष्टि से मदद करनी होगी। लेकिन सरकार करती नहीं है। आज भी सरकार को किसान की कोई चिंता नहीं है। केवल वोट बटोरने के बहाने चुनावी सिलसिले में किसानों के सामने आकर बड़े–बड़े वायदे किए जाते हैं। परंतु चुनाव होते ही उन्हें तांव पर रखा जाता है। कर्ज माफी करना किसान के प्रति का यह न्याय नहीं है । पर किसान कर्ज बजारी कर ना हो इस तरह की व्यवस्था निर्माण करना हमारे देश में आवश्यक है। तब कहीं जाकर किसान खुशहाल जीवन जी सकता है। किसानों को अपने छुठे आस्वासनों के जाल में फंसाने का काम निरंतर सरकार की ओर से हुआ है। प्रेमचंद का होरी जानता था कि उसका सिर जमींदारों के पैरों तले दबा है उसे अपनी नीति और भाग्य मान लेता है। लेकिन आज का किसान थोड़ा शिक्षित हो गया है उसे सरकार के झूठे वायदों का पता है। जिसका उदाहरण बता सकते हैं — जंतर–मंतर पर किसानों का विरोध प्रदर्शन मध्य प्रदेश किसानों का आंदोलन और महाराष्ट्र के किसानों का आंदोलन। इसकी लहर आज अन्य राज्यों में भी अनेक जगह दिखाई देती है। यह आज के किसानों की जागरूकता है। प्रेमचंद के होरी की तरह आज का किसान संतुष्ट नहीं है। जिसके कारण वह आत्महत्या के लिए विवश होता है। प्रेमचंद के होरी का आदर्श आज की किसानों के सामने है। प्रेमचंद के होरी की यह विशेषता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची:–

१) प्रेमचंद और उनका युग : डॉ रामविलास शर्मा

२) गोदान : प्रेमचंद

३) प्रेमचंद और भारतीय किसान : रामबक्ष

४) प्रेमचंद एक विवेचना : इंद्रनाथ मदान

25

कभी न छोडें खेत उपन्यास में कृषक चेतना

डॉ. सविता चोखोबा किर्ते
हिंदी विभाग प्रमुख,
श्रीमती सुशीलादेवी देशमुख वरिष्ठ महाविद्यालय लातूर

****

भारतीय अर्थव्यवस्था का प्रमुख आधार कृषि और किसान रहा है। कृषि और किसान की प्रगति से ही देश की प्रगती संभव है। किसान को अन्नदाता कहा जाता है। और बाजारीकरण के कारण उसे हाशिह पर रखा गया है। किसान को राजनीतिक, सामाजिक और आर्थिक परिस्थिति से जूझना पडता है। आज भी कृषकों के सामने अशिक्षा, गरिबी, भुखमरी एवं आत्महत्या जैसी अनेक समस्याएँ का सामना करना पडता है। स्वतंत्रता के बाद कृषक जीवन को हिंदी साहित्य में अनेक रचनाकारों ने लिखा उसमें प्रेमचंद प्रमुख रहे हैं। समकालीन रचनाकारों में शिवमूर्ती संजीव जगदीशचँद्र पंकज सुबीर आदि का नाम उल्लेखनीय है।

जगदीशचँद्र ने धरती धन न अपना, नरककुंड मे वास, जमीन अपनी तो थी और कभी न छोडें खेत आदि उपन्यास लिखे, इन उपन्यासों में कृषक चेतना का प्रभाव अधिक है। यहाँ पर कभी न छोडे खेत उपन्यास के कृषक चेतना पर विवेचन किया है। वैसे तो कभी न छोडे खेत में टूटते हुए अर्धसामंती समाज के किसानी जीवन के बिखरते ताने–बाने की त्रासद गाथा है। यह उपन्यास कृषक के त्रासद जीवन को चित्रित करता है बल्कि यह कहानी पंजाब में रहनेवाले जाट लोगों की है। इन जाट के नंबरदारों और नीलोवालियों का झगडा खेती के कारण होता है। वे एक दूसरे के दुश्मन बन जाते है। दुश्मनी का कारण उनकी खेती और जसवंत कौर रही है। उपन्यास में दोनों घर के लोग

Scanned with ACE Scanner